शैलचित्र

अनुपम कुमार

आज भी जीवंत रूप में कर्मागढ़ का शैलचित्र

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले से 30 कि मी दूर पूर्व दिशा में ओडिशा सीमा से लगी ऊषा कोठी नामक पहाड़ी पर कर्मा गढ़ शैलाश्रय स्थित है। शैलाश्रय में तीन सौ से अधिक बहुरंगी जलचरों की आकृतियां हैं, जो तीन सौ फीट लम्बी तथा बीस फुट चौड़े क्षेत्र में पूर्व मुखी पाषाण शिलाखंड पर अंकित है। इस स्थल के पश्चिम में भैंसगढ़ी के बांस जंगलों में भी बेनीपाट में कभी पचास से अधिक चित्र अंकित थे, किन्तु आज छः सात चित्र ही आंशिक रूप से स्पष्ट है। प्रदेश के सुदूर पूर्व के इस सीमा जिले में धर्मजयगढ़ छाल मार्ग और जोबी गांव के निकट की पहाड़ियों में भी शैलचित्र देखे जा सकते हैं। इसी तरह इस पहाड़ के आसपास भी शैलचित्र भी देखे जा सकते हैं लेकिन अधिकांशतः धुंधले और स्पष्ट नहीं हैं। कहीं कहीं पर कुछ स्पष्ट तो हैं पर वह भी मिटने के कगार पर है। इन सभी शैलचित्रों में प्रकृति से जुड़े पहलुओं के अलावा आखेट के चित्रण ज्यादा देखने को मिलते हैं। इन शैलचित्रों को देखने पर समझ आता है कि पहले यह रंगीन रूप में और पूरी तरह स्पष्ट दिखाई देते रहे होंगे। ध्यान से देखे जाने पर सभी कलाकृतियां कलात्मक रूप में भी दिखाई देते हैं। यह सभी शैलचित्र निश्चित रूप से पुरातन संस्कृति को आज भी हमारे सामने रखने में सक्षम प्रतीत हो रहे हैं।

कला जगत

रजनी रजक

आज भी प्रभावी रूप में है लोक गाथा ढोला मारु

छत्तीसगढ़ में प्रेम गाथा की गणना यदि की जाए तो संभवतः मुख्य स्थान में ढोला मारु को देना होगा। इसका कारण यह है कि यह एक ऐसी प्रेम गाथा है जो कि कई शैलियों में अलग अलग रूपों में भिन्न प्रसंगों को लिए भारत के कई स्थानों में देखी जाती है, परंतु ब्रज, निमाड़, बुंदेलखंड और छत्तीसगढ़ में ढोला मारु के रूप में प्रसिद्ध है। मौखिक और वाचिक परम्परा के द्योतक लोकगाथा ढोला मारु का यह स्वरूप छत्तीसगढ़ अंचल के जन जन में लोकप्रिय है। आंचलिक जनश्रुति में जीवित लोक गाथा ढोला मारु प्रणय गाथा है जो कि अत्यंत लोकप्रिय है। यदि पूरे लोक गाथा का अवलोकन करें तो गाथा का हर पहलू रहस्यों से भरा होता है जो दर्शकों के उत्सुकता को जानने और समझने के लिए प्रेरित करता नजर आता है। हर क्षण एक नया मोड़ दिखाई देता है। इस गाथा को रेवा परेवा के रूप में भी मान्यता है। इस लोक गाथा के मुख्य किरदार को रेवा, परेवा, जादूगरनी, राजा नल, राजा मारु, ढोला और तोता पर केंद्रित है। सम्पूर्ण गाथा सात खंडों में विभाजित है। संयोग और वियोग रस की परिपूर्णता ने गाथा का श्रृंगार कर सुंदरता से उन्मेषित किया है। देखें यह पंक्ति -

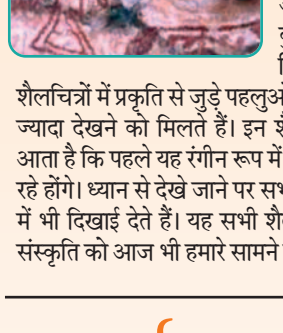

मुड़ कोरत कोरत देखय, दरपन हा लजाय।
रूप सुग्घर मोहिनी कस काया , चुनदी हा इतराय।
गोजा भर चुनदी कारी, कनिहा हा तोपाय।
धरे रेंगय माड़ी ला, लईका कस गोहराय।
पाछु ले देखे ले लागे, घपटे करिया बादर आय।

ऐतिहासिक

बागेश्वर पात्र

भुलाया नहीं जा सकता अबूझमाड़ विद्रोह

आदिवासी स्वाभिमान और मातृभूमि की आजादी के लिए परलकोट रियासत के भूमिया राजा गेंदसिंह बाऊ के नेतृत्व में सन 1824 में हल्बा, मुरिया और अबूझमाडिया आदिवासियों ने तत्कालीन शासन के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूंक दिया था, जिसे इतिहास में परलकोट अथवा अबूझमाड़ विद्रोह का नाम दिया गया। विद्रोह ने व्यापक रूप ले लिया था। अंततः ब्रिटिश मराठा सेना के हस्तक्षेप से विद्रोह पर काबू पा लिया गया। आदिवासियों के पारंपरिक अस्त्र शस्त्र, आधुनिक तीर धनुष, फरसा और आधुनिक बंदूकों के आगे टिक नहीं सके। विद्रोह के नायक गेंदसिंह को गिरफ्तार कर 20 जनवरी 1825 को उनके महल के सामने इमली पेड़ पर फांसी दे दी गई। ऐतिहासिक साक्ष्य के अनुसार गेंदसिंह छत्तीसगढ़ के पहले शहीद हैं। अखिल भारतीय आदिवासी हल्बा समाज द्वारा प्रति वर्ष 20 जनवरी को शहादत दिवस के रूप में गेंदसिंह को स्मरण किया जाता है। अंग्रेजों की शोषण नीति, अत्याचारी व्यवहार से क्षेत्र की जनता में काफी आक्रोश था। इस आंदोलन के क्रांतिकारियों को सरकार द्वारा आजीवन कारावास से लेकर कठोर से कठोर सजा दी गई।

छत्तीसगढ़ में गाये जाने वाले विवाह गीतों में लोक दर्शन के साथ- साथ धर्म और आस्था के दर्शन किए जा सकते हैं, जहां संगीत और नृत्य की सशक्त सनातनी परंपरा रामकथा से गूंथी हुई है। 'विवाह गीत' कालातीत और पारंपरिक गीत है। विवाह संस्कार के अवसर पर जो समयानुकूल गीत गाए जाते हैं।उसे 'विवाह संस्कार गीत' नाम से जाने जाते हैं। 'विवाह गीत' के विविध स्वरूपों में जैसे- बधाई, बरनी, गारी, समधन, ज्यौनार और देवी देखे जा सकते हैं। 'विवाह गीत' कहीं न कहीं हमारी सभ्यता और संस्कृति की परिचायक गीत है, जिसका वैवाहिक संस्कारों में सर्वोपरि महत्व होता है। हृदय संसार से सम्बद्ध गीत ही 'विवाह गीत' है।जो जनमानस को आह्लादित कर देता है। इससे लोग आत्मीयता से जुड़ जाते हैं। मूलतः 'विवाह गीत' एक लौकिक गीत है।

लोक आस्था की अनूठी अभिव्यक्ति विवाह गीत

आह्लाद के क्षणों में गाये जाने वाला 'विवाह गीत' नृत्य की रंगभूमि का अनायास निर्माण कर देता है और लोग थिरक उठते हैं। 'विवाह गीत' ग्राम्य गीत ही है। जिनमें जीवन की शुद्धता और भावों की सहजता सम्मिलित होती है। मानवीय जीवन के संस्कार की गर्भ से उपजे गीत ही 'विवाह गीत' है।

छत्तीसगढ़ में शादी की विभिन्न रस्मों के दौरान 'विवाह गीत' महिलाओं और दुल्हन की सहेलियों द्वारा गाये जाते हैं।चुल्माटी गीत से परिजन हंसते- हंसते लोटपोट हो जाते हैं-

'तोला माटी कोड़े ल नइ आवय धीर धीरे -धीरे,
तोला साबर धरे ल नइ आवय धीर -धीरे....।

तेलहरदी और नहडोरी के क्षणों में गाये जाने वाले 'विवाह गीत' में राम लखन के नामों का उल्लेख किया जाना धर्म और आस्था का ही प्रतीक है-

'तरी हरी नाना हो जयदेव नरायन।
राम लखन के दाई तेल चढ़त हे।
कहां वाले हरदी दाई तोरे...
दे तो दाई लोटा, गंगा नहाए ल जाहूं।
कोन कोड़ाये ताल सगुरिया।
कोन बनाये बांधे।
राम कोड़ाये ताल सगुरिया,लखन बनाए बांधे।
हे हो दाई....

मौर सौपनी के गीतों में धर्म के प्रति अनन्य आस्था के दर्शन किए जा सकते हैं-

'पहिनव दाई ओ सोन रंग कपड़ा।
सऊपव दाई माथे के मऊर...
मऊर सऊपत ले दाई बइंहा झन डोले,
धरमिन दाई सऊपव माथे के मऊर।...

भड़ौनी गीत एक ओर जहां विवाह के अनमोल क्षणों को हास-परिहास से भर देता है तो दूसरी ओर टिकावन के खुशनुमा पड़ाव पर बेटी की परिवार के प्रति प्रेम पूरित लालसा की दिव्य दर्शन किए जा सकते हैं-

'तुंहर गांव के चारों मुड़ा डुलवा डुलवा दिखथे रे।
जम्मो आए बरतिया मन बुढ़वा बुढ़वा दिखथे रे।'
टिक देबे ददा हाथी अऊ घोड़ा,
टिक देबे ददा लागत गाए।
टिक देबे दाई अचहर पचहर,
टिक देबे दाई नौलक्खा हारे।...

परम्परा : डॉ.राघवेन्द्र कुमार 'राज़'

भांवर (फेरे) के दौरान गाए जाने वाले 'विवाह गीत' में लौकिक प्रेम के साथ -साथ और अलौकिक भक्ति और प्रेम की झाँकी देखते ही बनती है-

'भांवर पड़त हे ओ नोनी दुलहिन के।
होवत हे दाई मोर राम सीता के बिहाव।
सात भांवर पड़गे हो नोनी दुलहिन के।
चलव- चलव दाई काहत हे बराती...

'विवाह गीत' की अंतिम परिणति विदाई गीत से परिजनों के नैन सजल हो आते हैं। मां बाप का प्यार भरा आंगन रो पड़ता है और सुखी दाम्पत्य जीवन का अमृत संदेश भी दे जाता है-

'जा दुलऊरीन बेटी तैंहा
घर ल सरग बनाबे ओ।
नान्हेपन के तैं बेटी
घर के लाज बचाबे ओ।
सास -ससुर के सेवा करबे
धरम के जोत जगाबे ओ।
झन रो मोर दुलऊरीन बेटी
जिनगी म सुख पाबे ओ।'

'विवाह गीत' वैवाहिक संस्कार की धड़कन है जो रूलाता भी है और हंसाता भी है।

गांव की कहानी : पूरन सिंह सिदार

प्रसिद्ध गढ़ों में एक केनागढ़

सरायपाली से लगभग दस कि मी दूरी पर दक्षिण दिशा में बस्ती पाली प्राचीन राजमार्ग पर केना नामक ग्राम है। इस ग्राम में भैना कालीन एक छोटा सा मैदानी गढ़ है, जो लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस गढ़ की आकृति अल्प गोलाकार है। पूर्व में इस गढ़ पर द्वारपालों की व्यवस्था थी, जिसे आज द्वार सेनी कहा जाता है। आज भी गढ़ के मुख्य द्वार के सामने सेनहा वृक्ष के नीचे द्वार सेनी की एक सामान्य पाषाण खंड के रूप में पूजा की जाती है। गढ़ के पश्चिम में विक्रम पाट (पाषाण खंड) देवता के सामने एक लोहे की कढ़ाई और संकल था, किन्तु कुछ समय पूर्व से यह प्रथा बंद कर दी गई है। इस देवता के प्रति लोगों में अपार श्रद्धा है। इस देवता को पूर्व में बकरे की बलि दी जाती थी, जिसे अब बंद कर दी गई है। वर्तमान में यहां श्वेत पूजा की जाती है। विक्रम पाट देवता अथवा विक्रम राज इस गढ़ के अंतिम भैना सामंत रहे होंगे, जिन्हें साय वंशीय मोगरा साय ने पराजित कर अपना साम्राज्य स्थापित किया था। गढ़ के भीतर खाई में प्राचीन मिट्टी के टूटे पात्र और टूटे ईंटें और कौड़ी पड़े हैं। इस गढ़ के दक्षिण में खलिहागढ़ बांध है। इस ग्राम के चारों दिशाओं में तालाब हैं। यहां के दर्रा तालाब में विजया दशमी के दिन सामंत परिवार अपने अस्त शस्त्र को धोता था। इस प्रकार के तालाब विभिन्न गढ़ों में हैं।

लोक साहित्य

डा. मंजू शर्मा

छत्तीसगढ़ी में मुक्तक काव्य की परम्परा

छत्तीसगढ़ी मुक्तक काव्य परम्परा का श्रीगणेश बीसवीं सदी के आरंभ में मिलता है। इसके के आधार पर पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय व पंडित पृथ्वी लाल तिवारी छत्तीसगढ़ी काव्य आंदोलन के अगुवा और नई पीढ़ी के प्रेरक हुए। इस कड़ी को पंडित शुक्लाल प्रसाद पाण्डेय और पंडित बंशीधर पाण्डेय ने आगे बढ़ाया। जगन्नाथ प्रसाद भानु की कुछ रचनाओं का उल्लेख मिलता है जिसमें मातेश्वरी गुटका छत्तीसगढ़ी जस गीत का संग्रह है। छत्तीसगढ़ी काव्य में ग्राम्य जीवन एवं लोक साहित्य का संचार करने वाले प्यारे लाल गुप्त छत्तीसगढ़ी काव्य के स्तंभ हैं। इस युग में ही छत्तीसगढ़ी साहित्य को मंच व प्रकाशन देने वाले युग प्रवर्तक कवि पंडित द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र का योगदान अविस्मरणीय है। पंडित कपिल नाथ मिश्र ने खुसरा चिरई के बिहाव लिख कर जहां प्रबंध काव्य की परंपरा को समृद्ध किया, वहीं पक्षियों की सूक्ष्म जानकारी देकर और उनका मानवीकरण करके नवोन्मेष का उद्भास किया। राजेंद्र प्रसाद तिवारी कृत भुईयां के पाकिस चुदी उल्लेखनीय काव्य संग्रह और छत्तीसगढ़ी काव्य के सशक्त कवि हैं। देखें उनकी यह कविता के अंश -

घा गोदर के का गोठियाबो,
छेना कस थोपाए हे।
भनन भनन माछी मन अंग में,
गोदना कस गोदाए हे।

स्वतंत्रता के पश्चात छत्तीसगढ़ी मुक्तक काव्य परम्परा का विकास बिलासपुर जिले के अतिरिक्त रायपुर और दुर्ग जिला उल्लेखनीय है। मुक्तक काव्य स्वतंत्रता के पश्चात अधिक लिखे गए और प्रचार माध्यमों में इसकी लोकप्रियता और प्रकाशन में इसकी सक्रियता दिखाई दी। आज सैकड़ों मुक्तक काव्य संग्रह प्रकाशित व हजारों अप्रकाशित काव्य संग्रह हैं।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

चिन्हारी

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

गांव-देहात म आगी बारे के बढ़िया खोरसी

प्रकृति म अइसे कोनों बेजान जिनीस नइ हे, जेकर कुछू-न-कुछू उपयोग नइ होय, याने दुनिया के हर बेजान चीज उपयोगी हे , बस जानकारी जरुरी हे कि कोन जिनीस के काय, कइसे, कब अऊ कहां उपयोग करे जाय। हर बेजान जिनीस- धुर्रा-माटी, ईंट-पाथर, रुखराई सब बने हें उपयोग करे याने बउरे बर। इकर उपयोग करई याने बउरई ल हम मनखे प्राणी ले जादा कोनों जीव-प्राणी नइ जान-समझ पाय, काबर कि मनखे हर सब जीव ले जादा अकल वाले जीव आय।

एक आहू बात सोला आना सच आय कि मनखे के रोटी, कपड़ा अऊ मकान ह मूलभूत जरूरत के जिनीस आय। ये मूलभूत जिनीस पाये बर अऊ बहुत से जिनीस जरुरत पड़थय। मनखे के सबले पहिली मूलभूत चीज रोटी ल तियार करे बर पानी के संगे-संग आगी के घलो जरूरत पड़थय। अब हमर गांव-देहात म आगी बारे बर छेना-लकड़ी उपयोग होथय। अब लकड़ी के बात चले ले आगी बारे बर एक जिनीस होथय अऊ वो जिनीस आय- खोरसी। येला खोड़सी घलो कहे जाथय।

कोनों रुख के गिरे या काटे ले वोकर सुक्खा या कइच्चा ठुड़गा याने ठूठ रही जाथय। इही ठुड़गा ल टांगिया के काटे ले नाना-नान कुटका निकलथय अऊ येकर नान्हे-ले-नान्हे कुटका ह किरचा आय। इही नाना-नान कुटका याने किरचा हर खोरसी आय।

खोरसी ल बेटा जात हो, चाहे माईलोगिन खेत खार ले बोरी या जउहा म जोर के घर लानथय। ताहन येला अच्छा बने लकलक ले घाम म रख देथय। खड़खड़ ले मस्त सुखाथय। खोरसी घाम म जतका जादा सुखाथय, वोतका बढ़िया बरथय।

खोरसी ल चुल्हा म दिगर लकड़ी अऊ छेना-खरसी के संग बारे जाथय। येला भुर्री घलो बारे जाथय। येहा बड़ बढ़िया बरथय। येकर आगी रगरग ले रहिथे। येकर ले कोयला घलो निकलथय। कोयला ह घलो बारे-जलाये के काम आथय। याने खरसी ल बार ले, अऊ वोकर कोयला ल घलो। आम के आम गुठलू के दाम।

खोरसी लनई म मनखे के मेहिनत के संगे-संग, अबिरथा रूप म पड़े चीज के उपयोग वाले बात घलो हो जथय। खोरसी लनई अऊ बउरई ह हमर लोक-संस्कृति के बचाय के एक बढ़िया जरिया आय। आगी बारे के कतको आधुनिक संसाधन के होय बावजूद हमर खोरसी बारे के परम्परा हर चलते राहय, येकर ले हमर अवइया नवा पीढ़ी हर खोरसी के महत्व ल जानही अऊ समझही। हमर खोरसी बारे-जलाये के परम्परा चलते राहय, येकर बर रुखराई लगई अऊ उन्ला बचई बहुत जरूरी हे। एक आहू बात ल ध्यान राखेला पड़ही कि काचा ठुड़गा के खोरसी निकाले ला झन पड़य। सुक्खा ठुड़गा ले ही खोरसी निकलई होय। हमला खोरसी मिलते राहय येकर बर आवव... हम सब एकक पेड़ लगावन।